किताबें मिलीं

मनोज मोहन

स्त्री-विमर्श का लोकपक्ष में अनामिका स्त्रियों के बराबरी के हक़ को मुख्यधारा के मुहावरे में आयत्त करने का उद्यम करती हैं। उनका कहना है कि स्त्री और पुरुष के बीच बराबरी की संस्कृति का विकास तभी हो सकता है जब पुरुष अति-पुरुष न रहें और स्त्री अति-स्त्री! लेकिन उनके अनुसार इस क्षेत्र में पहल पुरुषों को करनी पड़ेगी, क्योंकि स्त्री-समाज एक ऐसा वर्ग है जो वर्ग, नस्ल, राष्ट्र आदि की संकुचित सीमाओं से परे है। स्त्री-विमर्श पर यह एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है।

स्त्री-विमर्श का लोकपक्ष
अनामिका
वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
मूल्य : 595 रु., पृष्ठ : 240.

सिनेमा और साहित्य : नाज़ी यातना शिविरों की त्रासद गाथा में विजय शर्मा ने होलोकास्ट पर लिखे साहित्य और उस पर बनी फ़िल्मों का ज़िक्र किया है। होलोकास्ट, जिसे सामान्यत: यहूदियों के जातीय सफ़ाये के अर्थ में लिया जाता है, की विभीषिका में यहूदियों की एक सम्भावनाशील पीढ़ी को मौत के घाट उतार दिया गया था। लेखक ने निरपेक्ष भाव से होलोकास्ट से जुड़े साहित्य और फ़िल्मों के बारे में एक जगह इतनी जानकारियाँ जुटाने का मुश्किल भरा काम किया है।
सिनेमा और साहित्य : नाज़ी यातना
शिविरों की त्रासद गाथा
विजय शर्मा
वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
मूल्य: 695 रु., पृष्ठ : 256.

ज्याँ द्रेज़ और अमर्त्य सेन की रचना *भारत और उसके विरोधाभास* अंग्रेजी में *एन अनसर्टेन ग्लोरी : इंडिया ऐंड इट्स कंट्राडिक्शंस* 2013 में ही छप कर प्रशंसित हो चुकी है। लेखकों की मान्यता है कि लोकतंत्र का अर्थ केवल चुनावी राजनीति और नागरिक स्वाधीनताओं तक सीमित नहीं है, बल्कि उसका मुख्य ध्येय सत्ता का समतामूलक बँटवारा करना है। इसी लिहाज़ से उन्होंने सकल घरेलू उत्पाद की घटती-बढ़ती वृद्धि दर के बजाय जीवन-स्तर के बुनियादी सूचकांकों को तरजीह दी है। इस दृष्टि से यह किताब आर्थिक वृद्धि तथा सामाजिक प्रगति के अन्योन्याश्रित संबंध की गहन और तथ्यपरक पड़ताल करती है।

भारत और उसके विरोधाभास
ज्याँ द्रेज़ एवं अमर्त्य सेन
राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली,
मूल्य : 395 रु., पृष्ठ : 400

रज़ा फ़ाउण्डेशन ने हिंदी के साहित्यकारों की जीवनी लिखने के लिए वैचारिक आग्रहों से मुक्त लेखकों को फ़ेलोशिप देने की शुरुआत की है। इसी के तहत कलाचिंतक और साहित्यालोचक ज्योतिष जोशी ने जैनेंद्र कुमार की जीवनी लिखने का बीड़ा उठाया। जोशी जैनेन्द्र कुमार की मूर्धन्यता का प्रमाण देते हुए कहते हैं कि वे कथाकार तो अप्रतिम हैं ही, साथ ही प्रखर राष्ट्रवादी चिंतक-विचारक, हिंदी के अन्यतम व्यावहारिक दार्शनिक और भारत सहित वैश्विक राजनीति पर गहरी दृष्टि रखने वाले प्रबुद्ध राजनीतिक विशेषज्ञ भी हैं।
अनासक्त आस्तिक : जैनेन्द्र कुमार की जीवनी
ज्योतिष जोशी
राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
मूल्य : 795 रु., पृष्ठ : 300

पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र अपने लेखन और विचारों से ताउम्र गाँधी के मनुष्य को हमारे सामने लाने की कोशिश करते रहे। उनके देहावसान के बाद तमाम बिखरे साक्षात्कारों को समेटने का मुश्किल भरा

काम रज़ा फ़ाउण्डेशन ने किया है, यहाँ तक कि यूट्यूब पर उपलब्ध छोटे-छोटे और सीमित प्रश्नों वाली बातचीत को भी *पर्यावरण के पाठ* पुस्तक में दर्ज किया गया है। यह पुस्तक 'पर्यावरण के क्षेत्र में साधारण और सामुदायिक विवेक और विधि' का निरूपण करती है।

पर्यावरण के पाठ
अनुपम मिश्र
राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
मूल्य : 695 रु., पृष्ठ : 212

कश्मीरनामा : इतिहास और समकाल एक लेखक की यात्रा है न कि किसी देश के नागरिक की। लेखक कवि है और उसने गहन शोधवृत्ति का परिचय दिया है। कश्मीर पर लिखी गयी विद्वत्तापूर्ण रचनाओं से गुज़र कर बड़े तर्कसंगत ढंग से हिंदी के पाठकों के लिए तमाम जानकारियाँ मुहैया कराई हैं। पुरुषोत्तम अग्रवाल इसकी भूमिका में लिखते हैं कि विवरण चाहे कश्मीर के इतिहास का हो, चाहे समकाल का— लेखक के चित्त में स्त्रियों की दशा (अधिकांश दुर्दशा ही) के सवाल की सतत उपस्थिति आश्वस्तिदायक है।

कश्मीरनामा : इतिहास और समकाल
अशोक कुमार पाण्डेय
राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली
मूल्य : 625 रु., पृष्ठ : 464
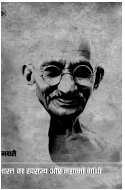
गाँधी के 150वें वर्ष में बनवारी की रचना *भारत का स्वराज्य और महात्मा गाँधी* गाँधी की विचार-दृष्टि को नयी रोशनी में देखने का एक प्रयास है। गाँधी किसी रूढ़ि का शिकार नहीं थे। वे देश और समाज को नि:स्वार्थ देख सकने की क्षमता रखते थे। यही कारण है कि उनकी अवधारणाओं और उनके आलोक में हम इतिहास और संस्कृति की किसी एक लीक पर नहीं चल सकते। गाँधी पर जिसने भी लिखा है, वह देर-सवेर धीरे-धीरे फिसलते हुए इस किनारे या उस किनारे चला जाता है। बनवारी ने इस किताब में संतुलन साधने का प्रयास किया है।

भारत का स्वराज्य और महात्मा गाँधी
बनवारी
राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
मूल्य : 895 रु., पृष्ठ : 316

इतिहास और किंवदंतियों के बीच झूलते जायसी के महाकाव्य *पद्मावत* की विवेचना करती मुजीब रिज़वी की रचना *सब लिखनी कै लिखु संसारा : पद्मावत और जायसी की दुनिया* को महमूद फ़ारूक़ी ने शाया किया है। इसमें भारतीय काव्य, लोक, साहित्यिक, धार्मिक और भाषाई परिभाषाएँ अरबी-फ़ारसी के क़िस्से और कहावतों से गुँथी हुई हैं।

सब लिखनी कै लिखु संसारा : पद्मावत और जायसी की दुनिया
मुजीब रिज़वी
राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
मूल्य : 350 रु., पृष्ठ : 350

इतिहासकार लाल बहादुर वर्मा की आत्मकथा *जीवन प्रवाह में बहते हुए* में उनके पेरिस प्रवास तक की कहानी है। उस समय वे महज तैंतीस साल के थे। इस आत्मकथा का दूसरा खण्ड *बुतपरस्ती मेरा ईमान नहीं* पढ़ना भी एक दिलचस्प अनुभव है। इन खण्डों में उन्होंने अपनी व्यक्तिगत बातों के बजाय सामाजिक सरोकार को ज़्यादा तरजीह दी है।

जीवन प्रवाह में बहते हुए तथा
बुतपरस्ती मेरा ईमान नहीं
लाल बहादुर वर्मा
संवाद प्रकाशन, मेरठ
मूल्य : 200 रु., पृष्ठ : 302 (पहला भाग)
मूल्य : 250 रु., पृष्ठ : 404 (दूसरा भाग)

उत्तर-आम्बेडकर राजनीति का प्रतिनिधित्व करती बसपा कई दफ़ा सत्ता में रहने के बावजूद दलित आंदोलन को दिशा देने में सफल नहीं रही। प्रदीप कुमार द्वारा रचित *दलित आंदोलन : बसपा एक विकल्प?* में बसपा की भूमिका पर आलोचनात्मक दृष्टि डाली गयी है। बसपा के संगठन, विचारधारा, चुनावी राजनीति, नेतृत्व आदि सारे पहलुओं के विश्लेषण के साथ-साथ उन्होंने उत्तर प्रदेश के आगरा तथा मथुरा में फ़ील्डवर्क पर आधारित अध्ययन पेश किया है।

दलित आंदोलन : बसपा एक विकल्प?
प्रदीप कुमार
अनामिका प्रकाशन, नयी दिल्ली
मूल्य : 395 रु., पृष्ठ : 444